Domain. Digitization by eGangotri. Funding

रसशोधनादिविधि

(९३४)

फो - २०

atta Family Collection, Changu Narayan, B

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

अथ मेशोधनमाद्यशानुपातादि

अत्र पादविधिः नक्षत्रकूटादि

यदा देवविधिर्गत्वा नाके तु पादिना नरो वा

यमश्चेत्ता पृच्छानुमादिनिर्देशः ।

टीका-अर्थ

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

समाजमुः शोकलोकशोकमि २ टीका-अथ
महादेवके वीर्यसें उत्पन्न भए पुत्रम मुलाए हा
त्रे नाकासु सोगा. इसा सुनीके देवना महादे
वजीके पासगए २
विवाहकारयामासुः पार्वत्यासहशूलेः पश्चा
नयोगीनःकालःसुनेकवनोमहान ३
टीका-ओ शिवका विवाह पार्वतीके संग कए व
ने भये. फिरी शिवपार्वतीको सुखकरने कारने
वहुत काल बितीत भया ३
नवावहिंपुरस्कृत्यदेवाजग्मुस्त्रिदोवनम् दृष्ट्वा
सांस्त्रीडितोदेवीहत्यवत्वानोस्तुका ४
टीका-नव सब देवना अग्निको आगे करिके शि
वजिके पास गए तब पार्वती देवतनको देखि

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MoE-IKS

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MoE-IKS

टीका-जो पश्चिमदेशमें सर्व कार्यमें कहे
है सर्वके जाननेवाली ऐसी यह पाकी कन्यासि
कही ७

वर्णभेदं प्रवक्ष्यामि नक्षत्रग्रहसंमाहितां श्वेतो
विप्रो विशालाक्षि रक्तः क्षत्रियप्रियेः ८
पीतवर्णो वैश्यः श्यामः शूद्रोऽस्निग्धनखो द्वि
जाः श्रेष्ठा एतेषां शोधितः सर्वरोगहृत् २

टीका-अब वर्णभेद कहताहो मा सावधान ठ
हे केशनी हे विशालनेत्रे, श्वेत पात्र ब्राह्मणहै
रक्तवर्ण क्षत्रिय है पीवला वैश्य औश्याम शू
द्रहै इनमें ब्राह्मण श्रेष्ठहै शुद्ध भयेसे सर्वरो
गहरनोहै ८ २

अथ दोषा नागो
वंशोऽतिशान्तमुखः [illegible] विषमलाम गिरि

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MoE-IKS

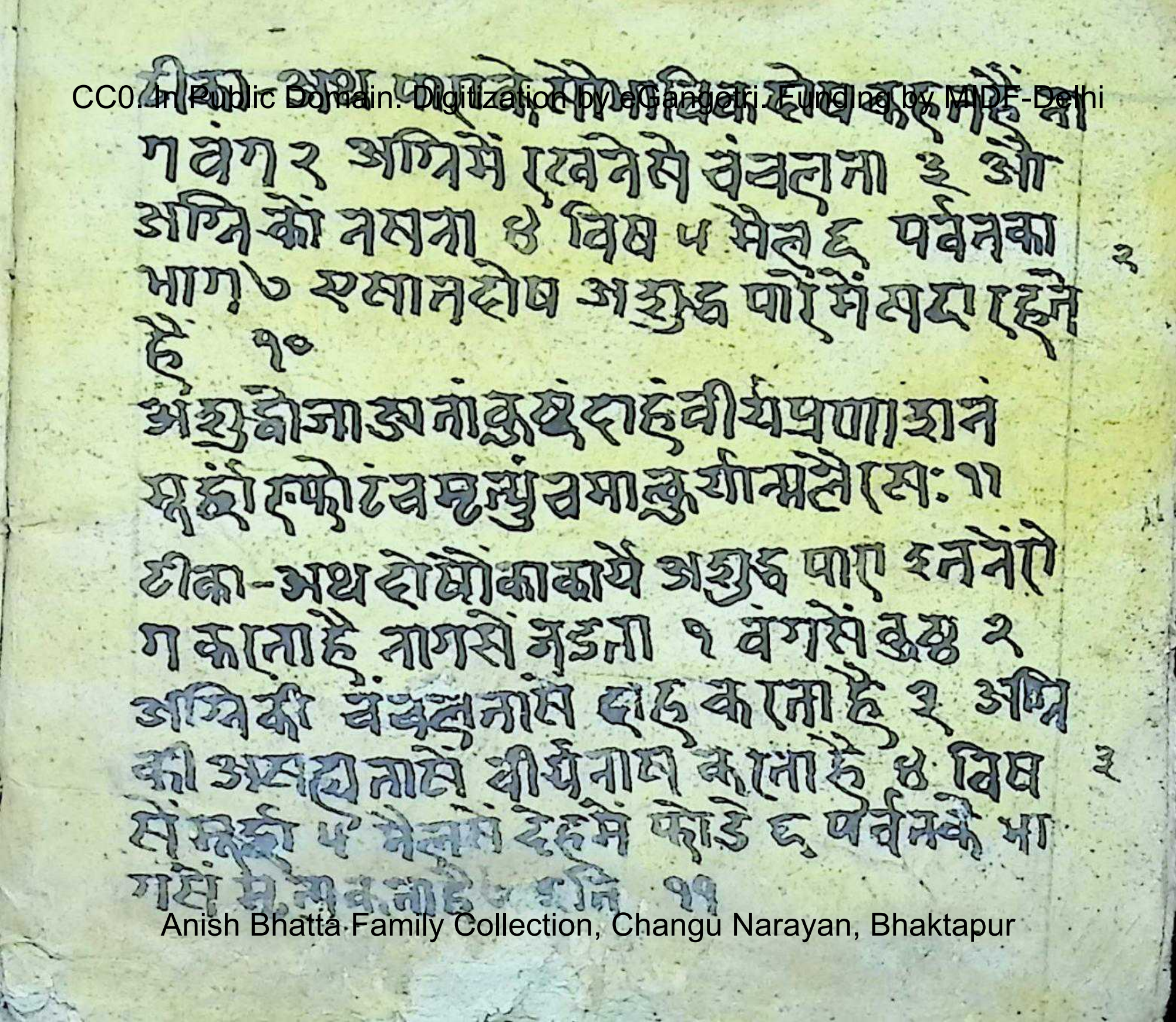

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MoE-Delhi

अथ शोधनं दर्दिनिबुनीरणादिनमर्कविमर्दयेन
ऊर्ध्वपातनकेयंत्रेवह्निदत्वात्रियामकम् १२ त्वा
गथनेमसूक्ष्मश्लक्ष्णमूर्ध्वसंनयेन पुनर्विवस्य
निबोर्वासैर्योमंविमर्दिनः कच्चुकेनागवंगाद्येमु
क्तःस्यान्मारदोनमः ११३

टीका-अथ शोधन कहेनेहै. हिंगलको निंबूके
रसमें एक दिन मर्दन करना फिर डमरूयंत्रमें
नीचे पहाकी आंच देना फिर आपसे ठंढे होने
पीछे ऊपरके पात्रमें लगा पारा लेलेना फिर नि
बू वा निबूके रसमें एक पहर मर्दन करनेसें नाग
वंगादिकका बत्तीसवा हिस्सा पारा शुद्ध होताहै १२१३

अथास्यः तन्नस्तंभनेसूक्ष्मविद्धेकांजिकेहय
ग्रीवेन १४

टीका-इसका अशुद्ध होनेसें वह पारेके
दोषोंको नाशकरता है. ऐसा कहते हैं.

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDE-Delhi

नमःसिके समुद्रम पाको वद कोके काजों मे दोहा
यंत्रकीके खेदन कौ १४
नमःकुमाकिकानीं मैं हयेकासंक्षेम चित्रकछ
हसैःपश्चाद्धासंमैं मध्येनमः १५ कोकमाखीद्र
वैधेसंवाक्काथैमनोदिनम् नमस्तेभ्यःसमुक्तम
रसंप्रशास्य कांजिकैः १६
टीका-फिरी कुमाषिपाठेके रसमें एकदिन खाल
कौ फिरि एकदिन चित्रकके रसमें खालकौ फि
रि एकदिन काकमाचीके रसमें जिसको मकोइसो
पीवडीभीकहतेहै फिरी एकादिन त्रिफलाके काढे
मेंखरल कीके काजिसेंधोवे १५ १६
नमःखलेविनिःक्षिप्यनर्दधैसैंधवान्वितम्
द्विजैकंनिंबुतीपामर्द्धेदध्यवभ्रमे १७
टीका [illegible] सेंधव मिलाइके नीबू

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

कर्षमेकं कदनं खोलकर १६
नेनः स्वरसमानेनानुग्रहीत्वानवसादमेकाजिकां
वासोनवप्रियेवैनेसुघांबुवा १८ समर्थ्यच
क्रियांकृत्वाशोषयित्वाघलेपयेत् हिंगुवाशोष
येत्पश्चाद्घृतपानकेत्रयेत् १९
टीका-फिर पोकीबोबा नवसागर एई सह
रस इनको लेके इनमें महिनकीके ठिकीया बना
इके सुखोवे फिर हिंगलपत्र को फिर सुखाइके
घृतमें धो. १८ १९
नाचक्रिकामधस्थात्पत्रेस्रवतो नहि अधःस्था
लीनत्रोसुद्रांदत्वादहनेद्रुधः २०
टीका-नीचेकी हांडीमें वह ठिकडी धरिके औडसह
ठीकोलवणसभी देई फिर दृढ मुद्रा देई २०
विशोषयेत्तत्रोल्लासधोवीकृत्रिमाम्लं दत्वा

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MoE-Delhi

नीक्षणमुपर्यधश्चनिधिंचेत्प्रयत्नतः ॥ अथ प्रमहा
टीका-पिछि सुवके सांव पीछे दूहेपरि
पहा नीक्षण अग्नि देई ओ उपकी हांडि जलो
वी साथ भीजी एवे २१
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यनिर्यंकृत्वाप्रयत्नतः अथ
र्ध्वभांडसंलग्नंगृहीयाद्रससुत्तमं २२
टीका-स्वांगशीतल भये पीछे निरखी की यत्नसें
खोले उपकी हंडीमे लग्या शुद्ध पारा लेलेई २२
पश्चाद्रसप्रकर्मोक्तस्वेदयेद्धोलयंत्रके सिंधुत्थवणै
र्गर्भस्थंवस्त्रवद्धोन्मोक्षः २३
टीका-पिछी सेंधवके कणिके वीचमें पारेके वस्त्रमें
बांधिके दोलायंत्रमे केवले जलमें स्वेदन कीनो
पारा दृढवान्होनाहे २३

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

करसंपुटसंस्थसमंडवालुकयंत्रकेन्यसेत्
ततःकुर्यांगंधकंतत्रक्षिपेदल्पंकणैः २४

टीका-अथ सेजाएं तहां मामामें हुएना
खिधक जाएं कहनेहैं छोटे मूनिकाके पा
त्रमें पाएंथिके वालुकायंत्रमें धरै फिा छु
एना गंधक थोएथोएं छपाएं डारना जाईस्य १

द्रविश्यनवलिंज्ञात्वाशीघ्रमुत्तार्ययत्नतः त्याग
हीनेहटेगंधस्फोटयित्वानयेद्समम् २५

टीका-जब गंधक गलिजाई नवधीरैं उतारि
लेई. जब ठंढा होई तब गंधकको कोंचिके शुद्ध ११
पाएनिकासिलेई २५

सर्वांगहरःस्नेहःजापहोत्यथा पनिद्रा
गात्रेकोतेयनेहेनिद्रावेन २६

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

टीका-सो पाए षट रोगको हरनेवाला है. जैसे महा
दव सर्व पाप हरनेवाला है २८

अथ त्रिगुण गंधक जारणफल समान गंधक जीर्ण
होइ द्विगुणो षेः गंधके द्विगुणो जीर्णो स
र्वकुष्ठनिषूदनः २९

टीका-अथ त्रिगुण गंधक जारणफल पोके
समान गंधक जीर्ण होनेसें शुद्धसेभी दो गुण
उत्तम पाए होता है. दूना गंधक जीर्ण होनेसें क
ष्टनाशक होत्ता है २९

गंधके त्रिगुणो जीर्णो जायते उत्तमः जीर्णो
वत्रगुणो गंधे वलीपलितजिद्यमः ३०

टीका-त्रिगुण गंधक जीर्ण होनेसें जडताको
हरता है. दोगुणा जीर्ण होनेसें वलीपलित
नाशके हरता है

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MoE-Delhi

गंधवाणगुणजीर्णेक्षयश्चकः शिवः गंधसे
गुणजीर्णेसर्वोनकेप्राणज्ञानः २२

टीका-पंचगुण जीर्ण होनेसें क्षयरोग हाकहो
है. चगुणा गंधके जीर्ण होनेसें सर्व रोगहाके
होना है २२

समंसमंहिशोदेविमुनावस्यप्रियामये नांव
वदाम्यविंशाक्षिहिमायजगतामपि ३०

टीका-हे आणकुमारि. महसत्यहै. शिवजीनें
आपकी प्रियो पार्वतीसें कहा है सोंभी जगत
केउपकारके वास्ते तुमसें कहताहौं ३० ॥

आणस्यविंशालाक्षि अनुमाहात्म्यमुत्तमम्
सर्वलोकेप्रख्यातंहिमाध्यनेसनशाणम ३१

टीका-अब आणका माहात्म्य सुनो. जेवर्ष

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MoE-IKS

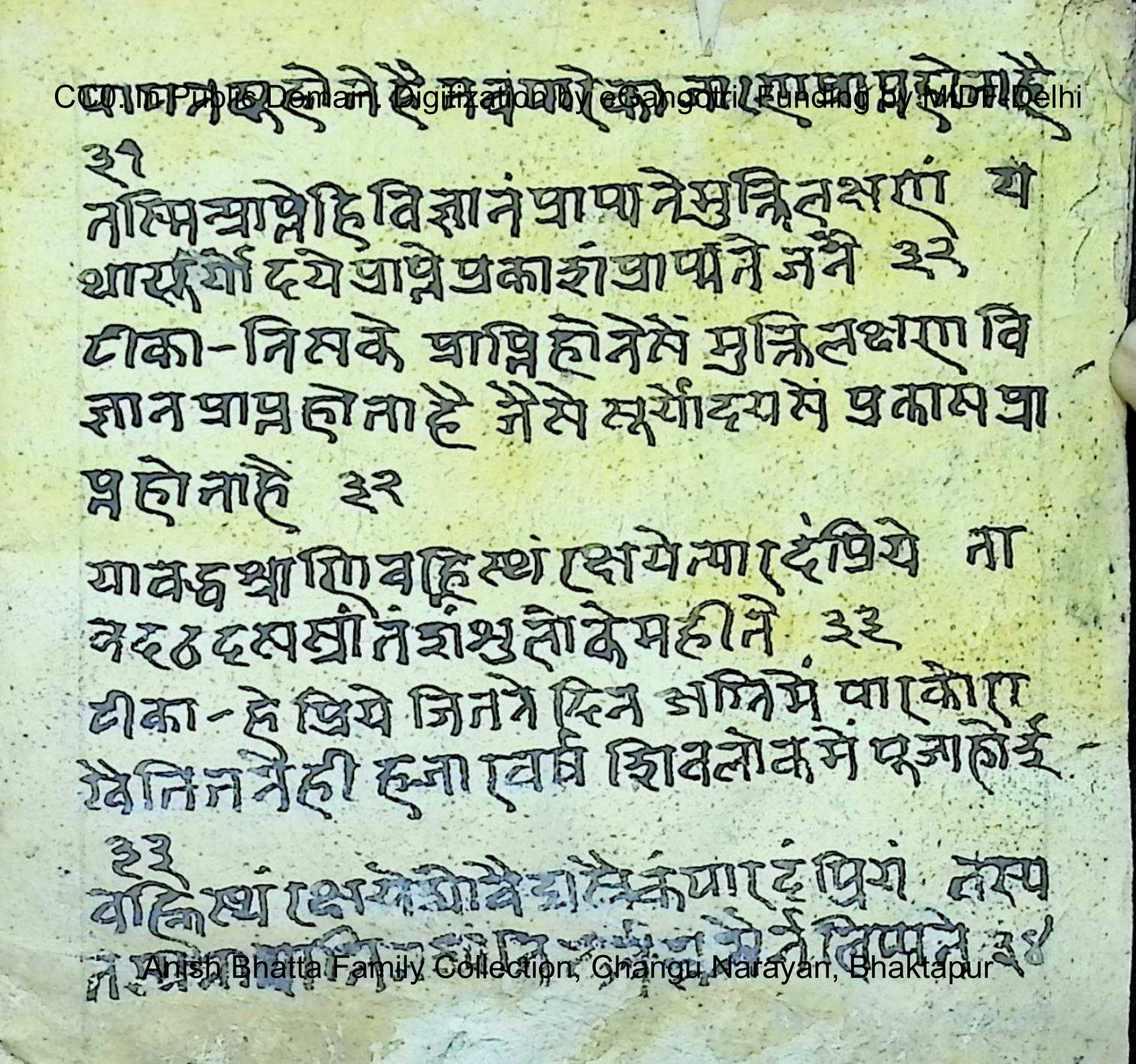

३१
तस्मिन्प्राप्तेहि विज्ञानंप्रापनेसुस्निलक्षणं य
थासूर्योदयेप्राप्तेप्रकाशंप्राप्तनेजनैः ३२
टीका-निमके प्राप्तिहोनेसें मुक्तिलक्षण वि
ज्ञानप्राप्तहोताहै जैसे सूर्योदयमें प्रकाशप्रा
प्तहोताहै ३२
यावद्धरतिवहिस्थं क्षेयेत्मादंप्रिये ना
वद्दशमासांतंशंभुलोकेमहीते ३३
टीका-हे प्रिये जितने दिन अग्निमें पाकोप
वेतितनेही हजार वर्ष शिवलोकमें पूजाहोई ३३
वक्तिष्ठं क्षेयतोवेयोनैकपादंप्रियं तेरप
[illegible]

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

टीका-जो एकदिन अग्निमे पाए रवी लेई नि. सके व
वे कीये पाप नष्ट होई जाने है अहि ओकै रे भी नेल
मैं नहीं ३४ इति निमेजोलोकः

अथ सम्यद्वृक्षिनकालो शृंगको वत्सनागश्च
कालकूटः प्रदीपनः सौष्टिको ब्रह्मपुत्रोहाग्नि
द्रः सन्तुकलंथा हालाहल इत्येते कादिभेदा
नवद्यमी ३५

टीका-अथ पाएकों दुरुक्षिन कालो कहने है.
शृंगक १ वत्सनाग २ कालकूठ ३ प्रदीपन ४
सौष्टि ५ ब्रह्मपुत्र ६ हाग्निद्रक ७ सन्तुक ८
हालाहल ९ ऐसे नवविषके भेद है ३५

अकोवर्ज्जी नथो सनोलोगलीहयमाकः गुंजाहि
केभिसमनेदाशोविषेसमहि ३६

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

टीका-आकड़ा १ अहि २ धतू ३ लागली ४ क
नेर ५ गुंजा ६ अफीम ७ ये सात उपविष हैं ३६
एतैः संमर्दितः सूनश्छिन्नपक्षोभवेद्ध्रुवं बुभुक्षा
जायतेचास्यधात्वन्नमांस्यात्पि ३७
टीका-इन कविके मर्दन किया पाए छिन्नप
क्षयाने पंखविनाका होनाहै. औ भुखाभी हो
नाहै. नवओ धातुनकोंखानाहै ३७
अथन्यःप्रकारः दौक्षौद्रिकटुश्चाधिहाजिक
नवसादम फेनाहानश्चेहिंगुश्चरसोनेषडु
पंचकम ३८
टीका-अथ दूसरा प्रकार. सोनीखा. नवसा
सूंठि मीरे पिप्पली ए नवसाद त्रिकस

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

टीका-फिरी एक कठागहिए मट्टीका लेई जिसके
नीचे छिद्र करै जिसपर हीरी एकके हीरी
के गले पर्यंत वालू रेतभरै ४३
ब्रह्मांसंन्यस्यहानकै त्रिदलाधियामकं प
क्षाद्विवर्धयेद्विक्रमात्समकप्रयत्नत: ४४
एवंद्वादशभियौमै:पाशोभस्मतांव्रजेत्
त्वागहीनांहिनां कपींक्ष्वेड्यमधुरक्षरो ४५
टीका-फिरी धीमें वहुघार धरै फिरी चारी
पहरकी मंद आंच देई फिरी तेज आंच क्रम
में वरतवै-ऐसे वारह १२ पहरकी आंचसेपा
रा भस्महोताहै फिरी आपसें शीतल भ
पर हीरीको फोरै ४४ ४५

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

ऊर्ध्वलग्नत्यजेद्धर्मस्थेपादेसति गृहोत्तम
वैकार्येषुयोजयेदामयापहम् ४६

टीका-हीहीमें ऊर्ध्वलग्न संधिक छोडिदेई औ
नीवेमा पाया लेलेई सो सर्वकार्यकनेवाला
है औरोगनाशहै ४६

अथात्मप्रकाः काष्ठादंवीकाद्युर्धेमर्दये
त्पादंतनः अमामार्गस्यवीजानांसमायुग्मवि
प्रद्रयेत् ४७

टीका-अथ नीसा प्रकार पाकी कहमीके
द्वारा धर्में मर्दन करीके गोला बनाई फिरी अ
मामार्गके वीजोंके दोसूसेवनावे जिसमें पाको
गोलाधरै ४७

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

द्रोणपुष्पीस्वरसभावितमेरण्डमूलं
मूषोदरलिप्तमेवपीतोगुलमान्त्रकम् ४८

टीका-फिरि द्रोणपुष्पी जो गूमा उसके पुष्प
औरायखिंग औरेरंडकी लुगदी मूसीके ॥
दोनाफेरके अंगुलफिरानीलगावे ४८

नक्षोलंसमभयेन्यस्यमूषायुग्मेविमृद्नयेत्
मृद्वग्नेःशोष्यनागाढंपाचयेद्विपुटेसंं
भस्मीभूतंसैंनेयंयोजयेन्सर्वकर्मसु ४९

टीका-फिरि उसको माटिके संपुटमें धरिके
कपोठीकीमुखाइके गजपुटआंच देई ॥
सो सगलभस्म सबैकार्यमेंयोग्यहोई ४९

अथाभ्रकप्रकारः अभ्रकंद्विविधंप्रोक्तं

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MoE-IKS

विमर्दयेत् तद्रसं गृह्णीयात् मूषायां विमर्द्रयेत् ५०

टीका-अथ चौथा प्रकार पारेको कठूमाके दूध में मर्दन करै औ उसीके दूधमे हींग घोटिके ॥ देहुली बनावे तिसमें वह पारा भरै ५०

तामध्यां मूषायेत्तध्वा मूषायुग्मेनुवेष्टयेत्
सप्तच्छिद्रैः समन्वितैः पश्चाद्धोषयेद्वह्नौ मध्यमम् ५१
पोटलीमुद्धरेत्पश्चाद्धोमभस्मन्यमाधुयात् नवं
लोहंतसोहर्यभूषलोमादेक्षणो ५२

टीका-फिरि उस मूषाको माटीके संपुटमे वं दकीके सनेकपोटी को फिरि सुखाईके हल्ल कामी पुट देई तौ भस्म होई ५१ ५२

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

अथान्यः नागवल्लीपत्रैः पिष्टः कर्कोटीकंदगर्भ
स्तन्मुखासंपुटेदग्धो लोहान्नेवभस्मनाम ५३

टीका-अथ पांचमा प्रकार. नागवेलीके पानके
बीचमें खप्परीकीके वा झकोडीके मूलमें सं
पुट करिके पुट देई तो भस्म होई ५३

अथगुणाः सोमेसैर्युक्तःसोधितोभस्मसा
क्तनः त्रिदोषघ्नश्चनःकामवर्धनःसर्वरोग
हृत ५४

टीका-अथ साधारणगुण- जा ए क रसक
रिकेयुक्त हे सोधा हूआ भस्म किंवाभस्मा त्रि
दोषकोंहोंत कारीहे कामदेवको बधारा
हे ओ सर्वरोगोंकों हरनाहे ५४

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

कामिनीदर्पदलनः सुधास्पर्धीसुवर्णकृत् व
ह्यः स्मृतिदोर्बलौजोरूपदः कृमिकुष्ठहा ५५
टीका-कामिनी स्त्रीके दर्पको दूरीकरता है
अमृततुल्य है सुवर्णीकारकहै नेत्रनिर्मल क
रता है स्मृति ओबल ओरूपको देनेवाला
है. कृमी ओ ओ कुष्ठको नाम करता है ५५
जाग्रज्जाड्यघ्नोयोगवाहीवाग्मेधहृत्य
ग्निसंदीपनीवयःस्थापनीमयान्त्रसः ५६
टीका-जाग्रअवस्था अपस्मृ ओ जडता ह
रकनाशक है. ओयोगवाही है जैसें अन्नपा
नसें देहपै तैसाही गुण करै जैसें अग्नि घास
को जलाताहै ऐसें धातुगत रोगोंको जा
[illegible]

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

अथदोषाःपूर्वमेवोक्ताःनक्तांनिःकथ्यते गवांदु
ग्धयुतंपीत्वागंधकंदिनसप्तकम् पादेस्फोटि
कारुग्दुष्टःसुखमवाप्नुयात् ५७

टीका-दोषतोपहले कहिआए. अब शांति
कहतेहैं गाईके दूधमे सातदिन गंधक पीने
से पादविकार शांतिहोताहै ५७

अथानुपानं गुंजैकमात्रमाक्षिकचतुर्गुंजाधिक
ैः सैंधवप्रियंगुक्षौद्रभक्षयेदनुपानतः ५८

टीका-अथ अनुपान एक रतीसे लेकर तीन
तक पाका सेंधनवल वल देखिके के ५८
घृतवल्लिजचूर्णंनसगंधामधुनाऽथवा मधु
स्निग्धहृतोथ्यावासर्वरोगेष्वनुयोजयेत् ५९
टीका-घृतकी वेलिसे उत्पन्न अथवा मधु

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

पिप्पलीसंग अथना घृतमधुसंग सर्वरोगमेदई ४२
पिनेकी रासिनाघृतकेपिप्पलीसाथसमीरोग श्लेष्म
ग्यारहकेजैनहीरेजेवीजैसे: ६०
टीका-पिनमें दूध शक्कासंग वातरोगमें पीपरी
साथ. कफमें शहदके मेघके जामे ब्रह्मीके
मर्म ६०
मधुनाकेविकेनोदधानीसाकेगदे समम
सोयष्टयंडंधंपीत्वापश्चात्सिनायुतम् ६१
टीका-इनकेविकामें मधुसाथ अनिमासे दही
साथ हरेके उपासे पथ्यमें यहकी दूधपानी १
मिलाईके औरे जल पानी सबिके दूध रहे
निसमें शक्का डालिके पीवे ६१
इतीसाकेदेम प्रेथनाहवेसे: अनिमा

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

येकफेदखेगुडसर्पिर्मीश्चिके ६२ पथ्येन्नंस
दधिस्निग्धंकवोठणंभोजनेहितम् हितमात्रं
गनंनेत्याद्यथामेमदनज्वो ६३
टीका- कोनिसामें बोलाईके सेमें बोला
ईकोनोडुकियाभी कहनेहैं जुवाममें ओ क
कांवगडेमें गुड मीवे घनेसाथ लेके सचि
क्कणदकेसाथ गाभागाम भोजन करेनोहि
नहै ६२ ६३
वीयेकवोनथालंभे मांषकषाडयष्टिजे:
खाडंग्वासनास्तुकेमधुसर्पिर्युनेलुवा ६४
टीको-वीयेवृद्धि नथा वीर्यनंधनेके वास्ते उड़द
भाबलका जेठीमध जिसको मुलेठी कहते
है इनकेचूर्णमें घाघमसेके दूधसे दूध

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

तनीयज्वरपिनेभ्रमेमधुमिनायुत जम्बीमेघा
मनाक्षेधासाकडालजंपिवेत् ६५ काथंकम
लपकांनातुल्यशीलेमनोहरे सुवीस्मानेरना
वास्पर्शवनेनमथान्वहम् ६६ क्षेवदने ज
लमुहीं -

टीका- तनीयज्वरपिन भ्रम इनरोगोंमें मध
साक्षासुक्षेवेईपिो तुलसीनागमोथनिम्बो ?
ई क्षेवदन धणा ईहीं जिसको वमनी कहते
हैं इनका काढापिये ६५ ६६

क्षेपिनेकफेकासेश्वासेक्काथेनसेवयेत् द्राक्षावा
साहिवानांसोपथसुक्कोगणेन ६७ शिवाहरीतकी:

टीका- क्षेपिने कफ श्वास·कास इनमें द्राक्षवो
अहिसा हरड इनके काढेमें पीवे ६७

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

मदोगदेशालिमंडैर्वेष्ठ्यमाक्षिकमंडनं भजे
द्गजास्यनुल्योऽपिस्थलःकहानोभवेत् ६८
टीका-मदोगमें बांवलके माडमें अथवा म
धुपानीसाथ ६८

नष्टपुष्पेरुगुलेशिवशल्यामिधेगदे काथे
कणानिलोत्थेनुभांगीत्रिकटुहिंगुजैः क्वे
थैर्घृतंसुखगुडैर्युक्तेमप्यनिर्विषेविना स्रवे
दसृंअथाएत्रौप्रियेशृंगासंग्रना ७०
टीका-जिस स्त्रीका जे नष्टभया होईसो औ
रुगुसवाली औ शूलरोगमें भांगी सोंठि
मिरे पीपरी हिंग गुड इनके साथ लेके ड
सेकाले सिरोंका काढा पियेतो शीघ्र दुःखजा
६९ ७०

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

अथपथ्य मृगयूषघृतेक्षुरसान्नसेवनकथा
नागरंपनसलवणमुलकंगोमिल्लिका ७१ शाक
कोननेवंशेष्टमेघनादंवकाक्रुकम् अभ्यंगस्नेह
दंस्नानंकोष्णोनोपेननिषेवनः ७२

टीका-अथ पाए सेवनेमें पथ्य- मृगका जूष घृ
त इक्षुरसका भात सेंधव लवण सोंठि
कमलकीजऽ मोथा गिलो पुनर्नवाका शाक
वोलाईका शाक वथुवाकाशाक तेलमर्दन नि
त्यंगामे जलसे स्नान ७१ ७२

रूपयौवनसंपन्नां लाभकुलांभजेस्त्रियाम् नेत्र
वृद्धिवेलकांतिर्वर्धनेसेवेविनः ७३

टीका-औ रूपयौवनयुक्त आपकीस्थाई स्त्री
संसंगकरो पाएसेवनेवालेका वृद्धि वल का

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

अथपथ्यं कलिंगकर्कटीवैवकूष्माडंकालक
म्रकुसुमशाकंककोटीकदलीकाकमाचिकाम्
७४ टीका-अथापथ्य तरबूज जिसको क
लींदभीकहते है कष्माड कोला कुसुंभका ॥
शाक ककोडा केला कंद काकमाची जिसे
सकोईकहे हैं ७४

ककाएकैकमिन्योनद्वर्जयेद्यस्तानंसुखी ७५
टीका-ये ८ ककाएक वस्तु मेसेवृक्त्यागे
तो जाठयाछिसं मुक्त होइके सोवर्षे जिवैठ
७५

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

अथनाशविधिः नत्रमा(ला)योग्यनाम्र द्विविधना-
म्रवैद्यैर्गदिनेम्रेचूनथैवनेपालम् कालनेनो
यत्क्यामनन्म्रेचूकमेवनेपाल २ ४५

टीका-अथ ऐषविधिकथनानंतर नाम्रविधिः कहते
है नाम्रको वैद्योनें दोप्रकाका कहा है एकेम्र
छ दूसरा नेपाल जोभंजन करनेसें श्यामनाम
कहना है सो म्रेचू ओ जो एकवर्ण हनाहै सो-
नेपाल ४५

त्याज्यंवालेम्रेचूग्राह्यंनेपालकंहिशुद्धनाम् श्रेष्ठ
नयोमान्शुद्धेहीधनेमधिशुप्रयत्नेन ४६

टीका-तिनमें शुद्धनेपाल ग्रहण कना ओम्रे
छकों त्यागना हशुद्धे प्रम नाम्रकेदोष ओहशु
द्धे हुतो ४६

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

टीका-वांनि१ भ्रांनि२ वेचनना३ ग्लानि४ नाम५ वी
र्यनाशना६ कंडू७ शूल८ ये आठ दोष नासूमें स
दाहै. अवं इन दोषको मिटानेके वाले शोधनक ॥
हनाहौं ४७

वक्ष्माणेषुद्रव्येषुनप्रनप्रंविनिःक्षिपेन् षप्रनक्र
नःशुद्धःस्याद्विरेचनसंज्ञाय: ४८

टीका-अगाडीके श्लोकनमें हिवैंगे जोद्रव्यनिन
मेनपाई नुझावे सानसान वेनोशुद्ध होई ४८

नैलंनक्रंवगोमत्रं वांनिंहन्याद्विरेचने कांजि
कंविकुलत्थांलोध्रांनिंहन्यात्सुरासवान् ४९

टीका-नैल मम गोमत्र वांनि दोष हीकाना
है ४९

वत्सीदुग्धंवगोदुग्धंक्रमंहनिद्विरेचन: क्षिप्तोमो
निष्टमिंवनाशयत्यचिरात् ५०

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

टीका-सेहुथहूका दध औ गोदुग्धकुम जोग्रा
नि निमकों मिजनाहै. अमिलीका पानी औनिंब
का पानी नापकों हूनोहै ५०

शीर्षिनोप्रलथाकंप्रासेःशूलंनिवायेन कंडू
नांगोघनंदुग्धंहंनिकृछ्राप्रथावलम् ५१

टीका-सोयेलका सेनथा घीकुमारीकारसमे
शूल निवारण कानोहै कंडूनाकों गोघनयुक्त दू
धकहनाहै ५१

हन्याद्वैवीर्यहंनृनंद्राक्षाक्षौद्रंनिनंनिनि वेनां
सौरणंनीरंहंनिमस्तुनथैवाहि ५२

टीका-वीयेनाकपाला द्राक्षा औ मधु दूधिक
पै है. वेचनाशूलाका पानी औ दहीका पानी
हरनोहै ५२

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

अथमाणं दिपत्राणिनदर्धस्तनंचलेविमर्दयेत्
तं निंबुजलीरैस्तावद्यावत्कुष्ठानिनाशयेत् ५३

टीका-अवमाणे कहनेहै. नाग्रपत्रबहुतपनेसे सुईसे छिदनेमाफिक कीके पत्रनमें आधपाव के साथमर्दनकरै. जहांनक सबपत्रश्वेतहोई ५३

नष्टिगणेहृच्चिगंधंधामार्गेनविमर्धसंलिंपेत्
पत्राणिहिदृढभांडेक्षिप्त्वासंपद्येतिमिकल्पाभ्यु-
क्ता ५४

टीका-तिनसेंदना हुवा गंधक धामार्गमें पीसिके लेपन करै धामार्ग इसको कहनेहै जोय व निर्गुंडी कीके वा घांव दिन पीछेमें सिजोये एवै. जब यहा होई तब कार्यमें लेई. मिट्टी नाग्र पत्र दृढ हांडीमें लिखे क्रमसें उपरोक्त रीत ओषधी ५४

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

हृद्धाहारवपुटकेपश्चाद्दंडेविनिक्षिपेद्भूतले मंदा-
ग्निनार्द्धियामेस्त्रियनेहुल्लंनितंबविलो ५५
टीका-पत्र सब पहिले दोसरावमें एकिके हांडीमें
धरै फिरि निमी भस्म भीके मुद्रा कीके चूल्हा मंदाग्नि
सें वाही पहर आंच देईतो नाश्र मो ५५
पश्चान्नदर्थेगंधंनद्वमनाविसदेयेन्नले मणोयेे
दैयपुटंगजाख्यंननश्चवेपाचम् ५६
टीका-फिरि उस नाश्रभस्मसें आधागंधक मिलाई सरा
णासमें खल्ल कीके गजपुट देई ५६
चतुर्थोहागंधेनपंचगण्येःपृथक्पृथक् पंचकृत्वःपु
टेनाश्रंमधुनामिनयाधुन ५७
टीका-फिरि भस्मसें चौथा भाग गंधक मिलाई माएया
ए गोदुग्ध छत दहीं मठा सबमें खल्ल की की ना १
हिमाणि पुटे देई. फिरि मधुयाने सहतके साथ उसी
दिनसे पिप्पलके साथसेवेतो पुष्ट देई ५७

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

सेविनश्यद्यदावांनि विधनोभावयेत्सुठेन गोक्षीरेण
नःशुद्धंहिश्वित्रीवानिभंभवेत् ५८

टीका-फिर जो पानसें वांनि कादे तो गोदुग्धकी
पूट देके आंख देखे शुद्ध मोकी गादनीका
रंग होई तो श्रेष्ठ है ५८

अथान्यः नाम्रपत्रमेमंसमंगंधमन्नेनमर्दयेन
नेनमंलिप्यपत्राणिशाखप्रकेदेहेन ५९

टीका-अथ दूसरा प्रकार नाम्रकी वोवा गंधक का
एवढाईसें मर्दन करिके पत्रोंके लेपन करिके म
जपुट देई ५९

गजाठेहेस्त्रिपुटेवंपत्रनाशयनेध्रुवम् वहुकुंड
लशोभंजंपीनोन्नुगपयोधरे ६०

टीका-ऐसे तीनि पुटसें भस्म होनाहे ६०

अथान्यः तुर्योक्तेनहिनेनेत्रनाम्रपत्राणिलेपयेत्

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

टीका-अथ नीमाएकाद्नाम्रपत्रमं चौथ भागपासे ना
म्रपत्र लेयन करिके निनसें इना गंधक वनाहमें पीमी ॥
कनीवे उपर एकिके हर
वांगेरिकल्कगर्भनघामंस्थाल्मांविपाचयेन् पंचत्वेजा
यनेझुलंनवेरोगहंभवेन हर

टीका-लोणीकी शुनदीमे एकके हांडिमें एकप
की नेज आन देई नो भस्म होई इति हर

अथसामान्यभस्मगुण कासंश्वासंकफंवानंक्षी
हानस्तनेक्रमीन् कुष्ठंशुलंज्वानेत्रांवमिंशोपंच
योइनं हर

टीका-अथ सामान्य भस्मगुण-कास-श्वास कफक्षी
ण वान ऽग्निरोग क्रमी-कुष्ठ शूल ज्वा आलस्य

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

मोहमेहोनिषाक्षयगुल्महोव्यथाम् हिक्कामे
हंभ्रमंहनिर्विहिंविबोधयेत् ६४

टीका-मूर्छा अर्शरोग अनिमा क्षय गुल्म हि
क्का हिचकी प्रमेह भ्रम इनने रोगोंको हरना
है औ भद्र बढानाहै ६४

अथापक्कदोषाः नाम्रमपक्कंवमनंविरेकनामादि
कंभ्रमंमूर्छा प्रमेहंवल्मनामंकोनिशुक्रमवाप्त
षष्ठ्यादि ६५

टीका-अथ अपक्कदोष अपक्क नाम्र भस्म वम
न विरेचन नाम भ्रम मूर्छा प्रमेह वल्मक नाम
वीर्य औ आयुष्य काभी नाश करनेहै ६५
अथदोषशांतिः मुनीश्रेष्ठिसिनाप्तनेमाधात्मकं
[illegible]

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

टीका-अथ ताम्रदोषहरणि कहने है. निंबी अथवा धना शक्कर जलमें निसि दिन पियें तो ताम्रदोषमें हुने वंद

अथानुपानानुपानं पिप्पलीमधुसंयुक्तंसर्वरोगेषुयो जयेत् सकृच्चापिप्रयुंजीतरोगनाशनवस्तुभिः ६७

टीका-अथ अनुपान-पीपरी सहत संग सब रोगमे देई अथवा आपकी बुद्धिमाफिक रोगनाशक वस्तु मे: ६७

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding by MIDF-Delhi

Anish Bhatta Family Collection, Changu Narayan, Bhaktapur